उपसंहार

उपसंहार

नाटक एक ऐसी साहित्य विधा है जो अपने दृश्यत्व के कारण साहित्य की अन्य विधाओं से अलग है। नाटक अपने दृश्यत्व के कारण दर्शकों के लिए अधिक रमणीय मनोरंजक और आस्वद्य होता है। उपन्यास, कहानी जैसी रचनाओं में रचनाकार जो कहता है उसे नाटककार अपने नाटक में दर्शकों के सम्मुख रंगमंच पर उपस्थित कर सकता है। यही कारण है कि नाटक को दृश्यकाव्य कहा जाता है। 'काव्येषु नाटकम् रम्यम्' ऐसा माना जाता है।

मृणाल पाण्डे हिंदी की ऐसी रचनाकार है जिन्होने अपने साहित्य के जरिए भारतीय मूल्यों के पतन को दर्शाया है। उनका समग्र साहित्य अपने जीवन के अनुभवों को प्रतिबिंबित करता है। आधुनिक नाटककारों में अपना विशिष्ट स्थान रखनेवाली मृणाल पाण्डे का जन्म मध्यप्रदेश के एक छोटे से गाँव में हुआ। मृणाल पाण्डे का बचपन संपन्न परिवार में बीता, परंतु संयुक्त एवं कट्टर सनातनी परिवार के कारण समस्याओं से उभारने के लिए माँ का संरक्षण कवच उपयुक्त हुआ। उन्होने एम्. ए. तक की शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय, इलाहबाद में पूरी की। उन्हें शास्त्रीय संगीत तथा चित्रकला में रूचि होने के कारण गंधर्व महाविद्यालय से उपाधि प्राप्त की है। स्नातकोंत्तर उपधि प्राप्त करने के उपरांत अरविंद पाण्डे के साथ विवाह किया। आगे उन्हें दो सुकन्याएँ प्राप्त हुई। अत: उनका पारिवारिक जीवन, बचपन और वैवाहिक जीवन संपन्न रहा। मृणाल पाण्डे एक पत्रकार संपादिका एवं अनेक संस्थाओं की सदस्या होने के कारण उनके साहित्य में वर्तमान युगीन अनेक समस्याएँ व्यंग्य के माध्यम से उभरकर आई हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा की हिंदी साहित्यकार के रूप में सिद्ध हुई है। उन्होने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध जैसी वैविध्यपूर्ण विधाओं का लेखन किया। उनके साहित्य में व्यक्तित्व और कृतित्व का अनोखा मेल है।

कला की दृष्टि से देखा जाए तो उनके साहित्य में विषय का वैविध्य शिल्पगत प्रयोग, भाषा में अनोखापन जैसे गुण अपने आप नजर आते हैं। साहित्य के माध्यम से भी उनके बुद्धिमत्ता की झलक मिलती है। किसी विषय को विश्लेषित करने के लिए व्यंग्य का प्रयोग करना और उसके माध्यम द्वारा प्रचलित समाज व्यवस्था की बुराइयों पर हँसते-खेलते वार करना मृणाल पाण्डे जैसे प्रतिभा संपन्न व्यक्ति के लिए ही संभव है। वे मात्र काल्पनिक कथा एवं नाटकों की रचना में ही नहीं रमी। उनकी लेखनी ने अपनी सजग प्रतिभा द्वारा समाज में स्थित अनेक विषयों के सत्य को भी उद्घाटित किया। उनके साहित्य में स्थान-स्थान पर सामाजिक चेतना के दर्शन होते हैं। यही कारण है कि नाटक, उपन्यास, कथाओं के साथ-साथ उनके कृति संसार में स्त्री विषयक प्रश्नों को उद्घाटित करनेवाला 'परिधि पर स्त्री' निबंध संग्रह भी उपलब्ध है। साथ ही साथ पत्रकारिता एवं संपादिका की जिम्मेदारियाँ बखूबी निभाना इससे उनका कार्यक्षम व्यक्तित्व परिलक्षित होता है। अत: कह सकते है इतनी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति मात्र घर-गृहस्थी के कार्यों में ही नहीं उलझ सकती, तो घर-गृहस्थी निभाकर अन्य अनेक कार्यों को हँसते-खेलते पूरा करती है।

हिंदी साहित्य के विकास में मृणाल पाण्डे का योगदान रहा है। उनके साहित्य पर परिवार, तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ तथा उनके व्यक्तित्व का काफी प्रभाव दिखाई देता है। उनकी साहित्य सृष्टि संख्या से कम लेकिन मूल्यों के आधार पर संपन्न है। वे उपन्यास, नाटक आदि विधाओं की अपेक्षा कहानी लेखन में अधिक केंद्रित हैं। इनकी अधिकतर कहानियों में पारिवारिक स्तर पर बदलते संबंधो को अनेक गुणों से चित्रित किया है। इन कहानियों का पारिवारिक परिवेश टूटा, तनावग्रस्त, उखड़ा-उखड़ा और संवेदनहीन दिखाई देता है। इसमें अपने

आपसी संबंधों के माध्यम से टूटता परिवार और टूटी परंपराएँ आर्थिक कारणों से बिगड़ते संबंध आदि भारतीय परिवश का बिगड़ता हुआ ढाँचा कहानी में चित्रित किया है। उनके साहित्य में अधिकतर आधुनिक संवेदना का स्वर मुखरित होता है। उनके साहित्य में हृदय की अपेक्षा मस्तिष्क का चिंतन वर्तमान है। उनका साहित्य निरंतर विकसित होता जा रहा है। उनके व्यक्तित्व के समान उनकी कृतियाँ भी अलग हैं। सभी नाटक प्रयोगशीलता की दृष्टि से पूर्णत: सफल हुए हैं। उनके साहित्य के समग्र मूल्यांकन से ज्ञात होता है कि वर्तमान भारत में मानवीयता की प्रतिष्ठापना उनके साहित्य का उद्देश्य रहा है।

आजतक इनके छ: नाटक प्रकाशित है। उनमें से एक अनुवादित है। इनका पहला नाटक 'मौजूदा हालात को देखते हुए' में बौद्ध जातक कथा पर आधारित है। किसप्रकार तीन आततायियों को अकस्मात सोना मिलता है और यही उनके विनाश का कारण कैसे बनता है इसे इसमें दर्शाया है। 'जो राम रचि राखा', नाटक विजयदान देथा की कहानी खोजी से प्रेरित लोकनाट्य शैली में लिखा उन्मुक्त एवं रोचक नाटक है। 'आदमी जो मछुआरा नहीं था' नाटक में पीढ़ियों का अंतरद्वंदव तथा पारिवारिक जीवन के तनाव को लोककथा के माध्यम से मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। 'मुक्तिकथा' मृणाल पाण्डे का नया व्यंग्य नाटक है इसमें आज के प्रजातंत्र में संपादकों-पत्रकारों पर मालिकों द्वारा लगाए गए जबरदस्त अंकुश और उन पर किए गए अमानवीय अत्याचार का घिनौना रूप प्रस्तुत किया है। 'चोर निकल के भागा' इनकी नवीनतम् नाट्यकृति है। नाटक में ताजमहल की चोरी की कल्पना कर आज के कला-संस्कृति के निलाम से देश को बचाने की भरकस कोशिश की है। प्रस्तुत अध्याय में मृणाल पाण्डे के व्यक्तित्व और नाट्य साहित्य पर यथोचित प्रकाश डाला गया हैं।

दूसरे अध्याय में 'चोर निकल के भागा' का तत्वों के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया है। व्यंग्य और कल्पना कथावस्तु के आधार हैं। इसमें ताजमहल की चोरी से मृणाल जी ने वर्तमान समाज जीवन में प्रेम और सौंदर्य के नष्ट होने की संभावना से हमें अगाह किया है। नाटक में मुख्य कथा के साथ सहायक कथा का समन्वय है। ताजमहल की चोरी की कथा के साथ सरकारी अधिकारियों की स्वार्थ प्रवृत्ति की कथा का चित्रण भी मार्मिक बन पड़ा है। कथानक के प्रारंभ में ही कौतुहल निर्माण में होनेवाली घटनाएँ रेखाकित हैं। आरंभ में नाटकीय प्रयोग, संवादों में वैचारिकता तथा रसात्मकता होने के कारण कथानक का आरंभ आकर्षक बन गया है।

आर्थिक तंगी को दूर करने हेतू दी हुई भभूत के प्रयोग से वाचक या दर्शक के मन में कौतुहल की निर्मिति हो जाती है। नाटक में स्थान-स्थान पर संघर्ष की स्थितियाँ हैं, जो कथानक को रोचक बनाती है। नाटक सुखांत है। नाटक में पात्रों की संख्या सीमित है। 'चोर निकल के भागा' एक व्यंग्यात्मक नाटक है। नाटक का कथानक कौतुहल पूर्ण एवं रंगमंचीयता की दृष्टि से विकसित हुआ है। नाटक का कथानक वर्तमान भारत को सामाजिक, राजनितिक स्थिति की काली तस्वीर प्रस्तुत करता है। नाटक में तत्कालीन भारतीय परिवेश की जीवंत अभिव्यक्ति का प्रामाणिक दस्तावेज है।

नाटक में कुल तेरह पात्र हैं। मुख्य पात्रों में महेश, नीता, गेंदालाल, शरीफा और बाबाजी आदि। गौण पात्रों में रामऔतार , बब्बर, जोकर, जेम्स बाँड आदि हैं। दो स्त्री पात्र तथा बाकी पुरूष पात्र हैं। चरित्र-चित्रण के लिए कथोपकथन तथा क्रिया कलाप प्रणाली का प्रयोग किया है। चरित्रों में कथावस्तु का उद्घाटन करने तथा उसके उद्देश्य की पूर्ति करने की पूर्ण क्षमता परिलक्षित होती है। वास्तव में यह एक व्यंग्य नाटक होने के कारण इसमें प्रमुख अथवा नायक-नायिका जैसे पात्र नहीं दिखाई देते। सभी पात्र मिलकर नाटक की कथावस्तु को आगे बढाकर

लेखक के उद्देश्य की पूर्ति में सहयोग देते हैं । मृणाल पाण्डे ने देश, काल तथा वातावरण निर्मिति तत्कालीन भारत की सामाजिक, राजनीतिक परिस्थिति को समाज के सम्मुख रखा है । समकालीन समस्या का चित्रण नाटक का उद्देश्य होने से समकालीन वातावरण को फैंटसी से चित्रित किया है । संवादों की भाषाशैली हास्य-व्यंग्य से परिपूर्ण है । संवाद, देश, काल, पात्र परिस्थिति तथा घटना के अनूकूल है । साथ हि कुछ संवाद क्लिष्ट, वैचारिक तथा हास्य-व्यंग्यत्मक होकर भी नाटक के उद्देश्य की पूर्ति की दृष्टि से उपयुक्त सिद्ध हुए हैं । पात्रों के चरित्र को विकसित करने तथा कथावस्तु को गति देने की पूर्ण क्षमता संवादों में हैं । भाषा एवं शैली की दृष्टि से देखा जाए तो प्रस्तुत नाटक में मृणाल पाण्डे ने हिंदी, उर्दू , अँग्रेजी ऐसी मिश्र भाषा का प्रयोग किया है । हास्य-व्यंग्यात्मक शैलीका प्रयोग कर कला-संस्कृति,प्रेम और परंपरा जैसे तमाम् मूल्यों के सौदे को दिखाया है । भाषा में मुहावरों,कहावतों का प्रयोग कर उसे सजीव तथा प्रभावशाली बनाया गया है । भाषा एवं शैली में नाटक को सार्थक एवं प्रभावी रूप से प्रदर्शित करने का सामर्थ्य है । प्रस्तुत नाटक का उद्देश्य कला संस्कृति के बाजारीकरण पर तथा तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों पर व्यंग्य कर समाज को जाग्रत करना है । वर्तमान भारत की सामाजिक विसंगतियों का तथा राजनीतियों की कूटनीति का चित्रण करना ही उनका उद्देश्य है । कुल मिलाकर 'चोर निकल के भागा' नाटक शिल्प , शैली, विचार आदि सभी दृष्टि से एक सफल रचना बनकर सामने आता है।

जीवन में जिस प्रकार सुसंगति आवश्यक है उसीप्रकार रंगमंच पर नाटक व्यवस्था तथा उसकीं प्रस्तुति में सुसंगति आवश्यक है । रंगमंचीय नाटक एक सामूहिक कला निर्मिति है और उसका आस्वादन समूह द्वारा होता है । नाटक में नाटककार, अभिनेता, निर्देशक तथा अन्य

रंगकर्मियों का योगदान रहता है। नाटकीय उपकरणों से ही नाटक को सफलता प्राप्त हुई है । प्रस्तुत नाटक रंगमंच और अभिनय की दृष्टि से एक सफल नाट्य रचना है । नाटक में नाटककारने अभिनय संबंधी पर्याप्त रंगनिर्देश दिए हैं । अंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक अभिनय के कुछ अवसर प्रदान किए हैं । नाटक हास्य-व्यंग्यात्मक होने के कारण इसमें ऐतिहासिक तथा सामाजिक नाटकों की तरह क्रोध, प्रेम, उद्वेग, विस्मय, अश्रू आदि भाव-भावनाओं का उद्वेलन नहीं दिखाई देता । अत: नाटक में अभिनय संबंधी यत्र-तत्र निर्देश प्राप्त होते हैं । नाटक के आरंभ में रूपसज्जा विषयक कोई जानकारी नहीं दी है, किंतु संवादों द्वारा ज्ञात होता है कि चारों युवक आधुनिक है , गेंदालाल और शरीफा मुस्लीम तथा पुराने जमाने के कलाकार हैं, बाबाजी साधुत्व की वेशभूषा में है । तीन अंको में विभाजित नाटक में दो प्रकार की दृश्यसज्जा का आयोजन किया है । जिसके निर्देश नाटक में प्रस्तुत है । अत: निर्देशक को दृश्यसज्जा विषयक आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है । पहले अंक की दृश्यसज्जा में एक जीर्ण-शीर्ण चाय का दाबा है । दूसरे दृश्य में मास्टर गेंदालाल का बरसाती कमरा दिखाया है । प्रस्तुत नाटक में फैंटसी (कलात्मक) दृश्यों के लिए नाटककार ने प्रकाश संयोजन का अत्यंत कुशलता से प्रयोग किया है । ध्वनि संकेतों के अंतर्गत पानी बरस ने, बिजली चमकने, बंदुक से गोली चलने, हेलिकॅप्टर, जेट विमान की ध्वनि आदि का यथास्थान प्रयोग किया है । इससे नाटक में स्वाभाविकता आ गयी है । प्रसंग या घटना के अनुरूप संगीत की प्रत्यक्ष योजना मंच पर की गयी है । पार्श्व ध्वनि और संगीत का सफल प्रयोग किया है । नाटक में रंगमंच के सभी तत्त्वों की विस्तार से जानकारी मौजूद नहीं है , फिर भी पर्याप्त निर्देशों के आधार पर नाटक का मंचन सफलता पूर्वक किया है। नाटक के मंचन की सूचना प्रकाशित संहिता में है । इस कसौटी पर नाटक को सफल माना जाना चाहिए ।

'चोर निकल के भागा' में मुख्यत: सामाजिक, राजकीय, कला-संस्कृति के क्षेत्र से उत्पन्न समस्याओं पर तीखा व्यंग्य कर लोगों की आँखो में अंजन डालने का प्रयास किया है। हमारा यह उपस्थित वर्तमान मूल्यों के जिस विघटन की घडी से गुजर रहा है, वहाँ न तो कोई नसीहत कारगर हो पा रही है न ही कोई गंभीर साहित्य का प्रभाव। अरोपित सोद्देश्यता के नारों और खोखलेपन से भी लोग ऊब चुके हैं। वे आदेश भी नहीं चाहते वे चाहते है शुद्ध मनोरंजन। इस मनोरंजन के मूल में वे व्यंग्य को अधिक महत्व देते हैं। व्यंग्य से एक और मनोरंजन होता है, तो दूसरी और अपनी उन सामाजिक विवशताओं से उत्पन्न कुंठाओंका विरेचन होता है, जो कुंठाएँ समाज के विकृत शोषण संदर्भ में उत्पन्न हो जा रही हैं। फिर इस व्यंग्य के इर्द-गिर्द हास्य के छीटे भी हैं। नाटक में समाज में तथा कथित प्रगतिशील लोगों के सामाजिक, राजनैतिक जीवन में आए विरोधाभासों की कलाई खोलने के लिए व्यंग्यबाणों का प्रयोग किया हैं। जनतंत्र में प्रशासन तथा सरकार से लड़ने के लिए व्यंग्य का उपयोग किया हैं। सत्य की अवधारणा पर व्यंग्य की प्रतिस्थापना हुई है। अत: वह झूठ, फरेब, कथनी और करनी की विसंगति, व्यर्थ बकवास आदि के परिप्रेक्ष्य में तत्त्ववेत्ता के समान वास्तविक दर्शन को उजागर किया है। भारतीय कला-संस्कृति की रक्षा करने के लिए यह व्यंग्यात्मक नाटक लिखा हैं। आधुनिक समाज पतन की ओर जा रहा है। समाज का दायित्व निभाते हुए मृणाल पाण्डे ने सामाजिक, राजनैतिक पतन और टूटते मूल्यों पर कड़ा व्यंग्य किया हैं। इसमें सामाजिक व्यंग्य के अंतर्गत महानगरों की भयावह स्थिति, समाज की विसंगतियों पर व्यंग्य आदि। आर्थिक व्यंग्य में सुशिक्षित बेकारों में आर्थिक तंगी, विदेशी शिक्षा का आकर्षण एवं परिणाम आदि। राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यंग्य के अंतर्गत खोखली सरकारी यंत्रणा, प्रशासन की निष्क्रियता नेताओं की कथनी और करनी में विसंगति, राजनीति में फैला अंधविश्वास आदि पर व्यंग्य से तीखा प्रहार किया। नाटक में कलावाद

और मार्क्सवाद का विवेचन है। कला संस्कृति में स्थित समस्याओं में कलाकारों तथा कलाकृति की उपेक्षा की ओर दिशा निर्देश किया है। कलाविष्कार को दुय्यम मानकर, कलाकृति का मात्र पैसा कमाने का साधन बनाकर उसमें भड़कीलापन तथा बनावटी, चमकदमक का प्रदर्शन मात्र रह गया है। इन बातों को व्यंग्य के माध्यम द्वारा उजागर किया हैं। कहा जा सकता है कि ताजमहल जैसी वस्तु की चोरी की फैंटसी ही अपने-आप में एक तीखा व्यंग्य है। समाज में अनेक स्तर पर जो विसंगतियाँ नजर आती हैं उन्हें चित्रित कर उनके दोषों पर व्यंग्य बाण छोडे है। इन समस्याओं का अध्ययन करने के पश्चात हम कह सकते हैं कि मृणाल पाण्डे अपने नाटक में समस्याओं को यथार्थ रूप में उजागर करने में सफल हुई है। इन्होंने मानवी जीवन के विविध धरातलों के नुसार समस्याओं को चुनकर अपने नाटक में संपूर्ण सजगता के साथ उन्हें प्रस्तुत किया हैं।

मृणाल पाण्डे के 'चोर निकल के भागा' नाटक में शिल्प तत्व और मंचीय तत्व का सुंदर संगम है। नाटक में संवादों का विशेष महत्व है बिना संवादों के नाट्य-रचना असंभव होती है। संवादों के अंतर्गत पात्रानुकूल संवाद, काव्यमय संवाद आदि के माध्यम से प्रभावी व्यंग्य की निर्मिति की है। भाषा एवं शैली में व्यंग्य का प्रयोग किया है। कहावतो और मुहावरों जैसे रूपों के माध्यम से आज की व्यवस्था पर करारा प्रहार किया है। नाटक में कोरस और अन्य गीतों का प्रयोग भी व्यंग्य निर्मिति और हास्य निर्मिति में सहायक हुआ हैं। जीवन की विभिन्न समस्याओं,उलझनों,कठिनाइयों को हास्य-व्यंग्य द्वारा प्रकट करके बीमार के लिए कडवी दवाइयों के साथ टॉनिक दिया जाता है। वैसे ही व्यंग्य के साथ हास्य रूपी टॉनिक दिया गया है। अत: कह सकते हैं कि मृणाल पाण्डे का विवेच्य नाटक मूल्यों के संवर्धन में सहयोग करता है। साथ ही सुधारवाद और नैतिकता को वह बढ़ाया भी देता है।

परिशिष्ट

परिशिष्ट

मृणाल पाण्डे
249 Anand Village
New Delhi

26/4

प्रिय सुचिता जी,

पत्र मिला, धन्यवाद। आप प्रश्नसूची भेज दें, मैं यथासंभव उत्तर भेज दूंगी। मैं राष्ट्र से बाहर थी, अभी लौटी हूँ - और परसों फिर 5 दिन को जा रही हूँ - यदि उत्तर पाने में देर हो तो अन्यथा न लें -

[illegible]

23/6/2001 Gist

प्रिय सुचेता जी,

जैसा फोन पर बताया था, जीवनवृत्त तथा एक interview की प्रति भेज रही हूँ। वापस कृपया interview की यह प्रति ज़रूर लौटा दें, मेरे पास दूसरी प्रति नहीं है।

खेद है समयाभाव में मैं ज्यादा कहने-लिखने की स्थिति में नहीं हूँ।

[illegible]

परिशिष्ट

मृणाल पाण्डे का रचना संसार

उपन्यास :

1) विरूध्द

2) पटरंगपूर पुराण

कहानी संग्रह :

1) दरम्यान

2) शब्दवेधी

3) एक नीच ट्रेजिडी

4) एक स्त्री की विदागीत

5) यानी कि एक बात थी

6) बचुली चौकीदाविन की कढ़ी

नाटक :

1) मौजूद हालात को देखते हुए

2) जो राम रचि राखा

3) आदमी जो मछुआरा नहीं था

4) चोर निकल के भागा

5) मुक्तिकथा

6) देवकीनंदन खत्री के उपन्यास 'काजर की कोठरी' का इसी नाम से नाट्य रूपातंरण

निबंध :

परिधि पर स्त्री

अँग्रेजी :

1) द सबजेक्ट इज वूमन (महिला-विषयक लेखों का संकालन)

2) द डॉक्टर्स डॉटर (उपन्यास)